गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान देश के कुछ चुनिंदा फलसफ़ाकारों, इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों, मानव विज्ञानियों, समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों और जननांकीविदों के साथ डी. फिल. कार्यक्रम और एम. फिल-विकास अध्ययन कार्यक्रम चलाता है। संस्थान में सीख रहा हर व्यक्ति समाज से लगातार सीखने-सिखाने में लगा है। संस्थान ने परंपरागत विषयों में शोध के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जन सुविधाओं तक पहुँच, श्रम के संगठन और रोजगार की उपलब्धता, सामाजिक न्याय, अपवंचित तबकों के राजनीतिक सबलीकरण, उनके आत्मबोध पर अंतर्विषयी शोध किया है। उत्तर प्रदेश में दलित राजनीति ने पूरे देश का राजनीतिक परिदृश्य कैसे बदल डाला है, इस बात पर एक बेहद उम्दा लेखन संस्थान से निकलकर सामने आया है।

संस्थान में आधुनिकता और लोकतंत्र से भारतीय समाज की लट्ठम-लट्ठ पर गहन चिंतन किया जा रहा है। हम इतिहास में सूफी आंदोलन का व्यक्ति और राज्य से संबंध, प्राकृतिक संसाधनों पर दलितों की हकदारी, नदियों और वनों से जुड़े समुदायों के जीवन, पिछड़े समूहों की राजनीति के निर्माण, भूमि संबंधों, कृषक संरचना, प्रवास, पिछड़ेपन, शहर की देहरी पर हो रहे रूपांतरणों पर निरंतर बात करते हैं। संस्थान घुमंतू और विमुक्त समुदायों की भाषा और राजनीति, महिलाओं, अल्पसंख्यकों और आदिवासी समूहों की मजबूरियों और हसरतों, उनकी रोजमर्रा की लानतों-मलामतों के बारे में सोचता है। इस सोच को वह बाहरी दुनिया से साझा करता है। उसने पत्थर तोड़ रहे जनों को उनका हक़ दिलाने से लेकर मुसहरों की जिंदगियों में अपने लेखन से एक हस्तक्षेप करने का प्रयास किया है। संस्थान समाज को ज्ञान और सहज बुद्धि का कारख़ाना मानता है। इस ज्ञान और सहज बुद्धि के पास जाकर संस्थान अपने आपको समृद्ध करता है और फिर समाज को उसे लौटा देने का प्रयास करता है। संस्थान के दरवाज़े और खिड़कियाँ नई हवाओं के लिए खुले रहते हैं।

हम एक ऐसा संस्थान बनाने का प्रयास कर रहे हैं जहाँ सत्ता, ज्ञान और समाजविज्ञान पर सबकी हकदरी हो।

आवरण शिल्प
देवीप्रसाद रॉय चौधुरी

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान
झूंसी, इलाहाबाद - 211019

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
10–11 दिसंबर 2016

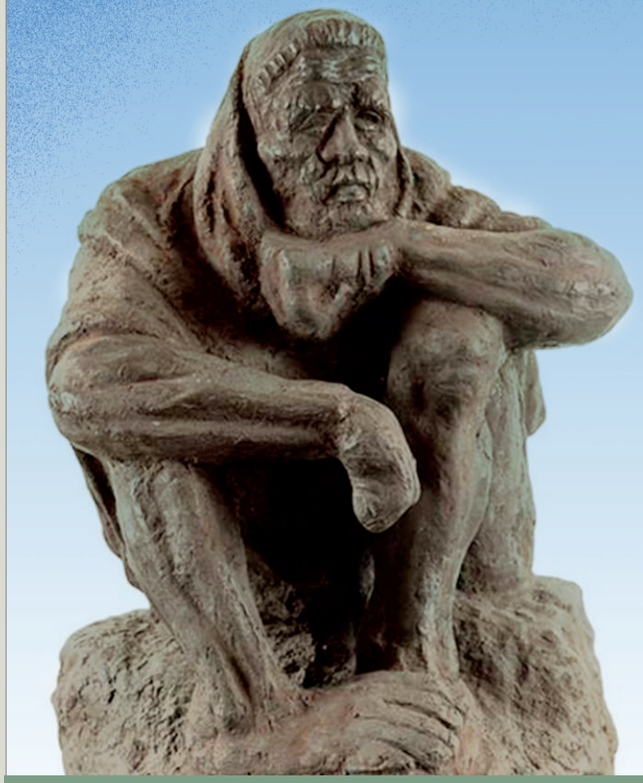

रचनात्मकता, आलोचनात्मकता और समाज विज्ञान

Creativity, Criticality & Social Sciences

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान
इलाहाबाद

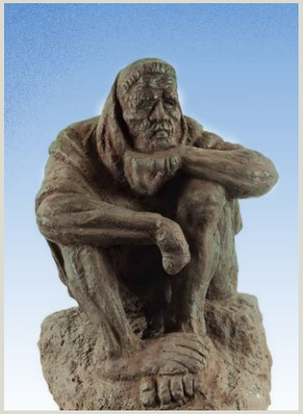

हे प्रतिभागियों,

गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान की चिंता प्रश्नों और बेचैनियों को धार देना है। यह धार बौद्धिकों के वेताल प्रश्नों से उपजती है। इसलिए समाज विज्ञान की रचना और आलोचना पर संस्थान छात्रों, संपादकों और विद्वानों को इकट्ठा कर एक विमर्श करना चाहता है। इसमें युवा समाज विज्ञानी नवीन और मौलिक रास्तों की ओर अग्रसर हो सकेंगे। इसके लिए चले आ रहे ढाँचों को तोड़ना होगा। तोड़ना ही काफी नहीं, हमें एक नया समाज विज्ञान भी सिरजना होगा।

समाज अपने बारे में बात करने के लिए कई जुगत तैयार करता है। किस्सागोई, मज़ाक, चुटकुले, मुहावरे, लोकगीत, कविताएँ और यहाँ तक कि शोकगीत में समाज अपना सच बयान करता है। इस सच को महावीर प्रसाद द्विवेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, राहुल सांकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी और श्रीलाल शुक्ल के लेखन में देखा जा सकता है। लोग समाज का सच कहते, सुनते और गुनते हैं। इस गलचौरे में समाज की निर्मम आलोचना भी होती है। एक जोगी की तरह समाज अपने पर ही सवाल उठाता है। ये सवाल काफी तीखे होते हैं जिनके जवाब तेनालीराम, घाघ-भड्डरी, गोपाल भांड और बेताल दे सकते हैं। यह सवाल न तो राजा से डरते हैं और न उसके अमले से। यह संगोष्ठी आपको उन्हीं सवालों के बीच में लाकर छोड़ देना चाहती है।

अगर इन सवालों का जवाब जान-बूझकर नहीं दिया तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे !

रचनात्मकता, आलोचनात्मकता और समाज विज्ञान

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

सत्र योजना

पहला दिनः 10 दिसंबर 2016

सत्र 1 प्रातः 11.00 बजे से 12.00 बजे

प्रतिभागियों का स्वागत : प्रो. प्रदीप भार्गव

संगोष्ठी का परिचय : प्रो. बद्री नारायण

प्रतिभागियों का परिचय

चायः 12.00 से 12.15 बजे

सत्र 2 12.15 से 2.00 बजे

समाज वैज्ञानिक लेखनः समस्या और संदर्भ

प्रो. अशोक कुमार कौल
प्रो. ललित जोशी
प्रो देवेंद्र चौबे
प्रो. बद्री नारायण

भोजनावकाश 2.00 बजे से 3.00 बजे

सत्र 3 3.00 बजे से 4.00 बजे

रचनात्मक कल्पनाशीलता और समाज विज्ञान में शोध

प्रो. अपूर्वानंद
प्रो. ए. ए. फातमी
प्रो. आशीष त्रिपाठी
प्रो. प्रदीप भार्गव

दूसरा दिनः 11 दिसंबर 2016

सत्र 4 प्रातः 10.30 बजे से 12.00 बजे

सामाजिक स्मृति और सामाजिक ज्ञान

प्रो. रमेश दीक्षित
श्री अखिलेश
डा. मणींद्र ठाकुर
डा. सतीश झा
डा. अनंतराम मिश्र

चाय 12.00 से 12.15

सत्र 5 12.15 से 1.30

युवा समाज वैज्ञानिकों की दृष्टि

नीलम सरन गौर
डा. प्रीति चौधरी
श्री अनिल मिश्र
डा. सतेंद्र
डा. चंद्रैया

भोजनावकाश 1.30 से 2.30 बजे

नया आख्यान–
नयी अंतर्दृष्टि : वेताल कथा पर परिचर्चा 2. 30 से 4.00

प्रो. ललित जोशी
श्री अखिलेश
डा. सूर्यनारायण
डा. अवधेश मिश्रा
श्री जीत पांडेय

चाय 4.00 से 4.15

सत्र 6 4.15 से 4.45

जन समाज विज्ञान और अपवंचित समाज : भविष्य की दिशाएं

डा. अर्चना सिंह
डा. रमाशंकर सिंह

सत्र 7 4.45 से 5.30

समापन

संगोष्ठी का सार प्रस्तुतीकरण : श्री जितेंद्र सिंह

समापन भाषण : प्रो. वीरेंद्र यादव

धन्यवाद ज्ञापन : डा. अर्चना सिंह

यह संगोष्ठी भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, उत्तर मध्य क्षेत्र द्वारा वित्त पोषित है।